इकाई–6 भोजपुरी निबंध – 'इमली के बीया'

इकाई के रूपरेखा

6.0 उद्देश्य
6.1 प्रस्तावना
6.2 निबंधकार के परिचय : डॉ॰ विद्या निवास मिश्र
6.3 'निबंध' शब्द के व्याख्या आ परिभाषा
6.4 निबंध के प्रकार आ भोजपुरी निबंध – 'इमली के बीया'
6.5 निबंध के भाषा आ शैली : भोजपुरी निबंध 'इमली के बीया'
6.6 भोजपुरी निबंध के उद्भव आ विकास
6.7 'इमली के बीया' : वर्ण्य–विषय आ भाषिक शिल्प
6.8 'इमली के बीया' : प्रासंगिकता आ महत्त्व
6.9 बोध–प्रश्न

6.0 उद्देश्य

निबंध अंग्रजी के Essay शब्द के हिन्दी पर्याय ह। ई गद्य के एगो प्रमुख विधा ह। आझ के वैज्ञानिक युग में भी एकर उपादेयता आ महत्त्व ह। एकरा आधुनिक युग के एगो देन का रूप में स्वीकारल जा सकेला। एह में निबंधकार के व्यक्तिगत जीवन के विशेषता समाहित रहेला। निबंध के लिखला आ पढ़ला से ना खाली विद्यार्थी के ज्ञानोपार्जन होखेला बलुक गद्य के लेखन करे भी आवेला। ई से निबंध के अध्ययन कइल सोद्देश्य होखेला।

निबंध–लेखन एगो कला ह जे अभ्यास कइला पर लिखे आवेला। जइसे–जइसे अभ्यास बढ़त जाला, ओइसे–ओइसे निबंध–लेखन भी समृद्ध होइत जाला। एकरा हमनी का एगो शारीरिक तपस्या आ मानसिक प्रशिक्षा भी कहि सकिला। कवनो विषय–वस्तु के गहन अध्ययन निबंध–लेखन हेतु आवश्यक होखेला। अधकचरा अध्ययन कइला से नीमन निबंध के रचना ना हो सकेला। निबंधकार के अध्ययनशील होखल जरूरी बा। जवन जतना भाषा के जानकार होखेला, ऊहाँ के ओतना नीक निबंधकार बनिला। एहि से पाठ्यक्रम में निबंध के समायोजन कइल जाला ताकि छात्र लोगनि निबंध के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्वन के अध्ययन क के श्रेष्ठ निबंधकार बनि क साहित्य जगत में आपन स्थान निर्धारित करि सके। ई तरे निबंध लेखन आ ओकर अध्ययन दूनो उद्देश्य से भरल पड़ल ह।

निबंध–लेखन खातिर निबंधकार के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न भी होखे के चाहीं। निबंध प्रतिभा के परिचायक होखेला। जवन जतना प्रतिभावान होखेला, ओकर निबंध ओतने बेसी उत्कृष्ट होखेला। अदना निबंधकार के निबंध भी अदना होखेला जकरा कोनो ना पूछेला आ ओकरा रद्दी के टोकरी में फेंक दिआला। जइसे कवनो तबला बजावे वाला कलाकार अथक मिहनत क के अपन अंगुलियन के ही सुमरनी बना देबेला, ओइसहीं कवनो समर्थ निबंधकार कतना उज्जर धप–धप कागज प कार कुच–कुच सियाही से असंख्य शब्द–वाक्य के संहार करेला त ओकरा निबंध लेखन करे आबेला। ई तरे निबंध–लेखन आ ओकर अध्ययन दूनो उद्देश्य हीन ना हो सकेला।

निबंध–लेखन के सूचना सब के संकलन मात्र ना कहल–समझल जा सकेला। एकरा सब तथ्यन के प्रलंब सूचियन भी ना कहल जा सकेला। कवनो बान्धल–बन्धाइल लीक प चलि क भी निबंध ना लिखल जा सकेला। आपन बेअरथ के फजूल विचार भरि क भी उत्कृष्ट निबंध के रचना ना कइल जा सकेला। ई सब तथ्यन के जानकारी दिहल आजु के विद्यार्थी के लेल जरूरी बा काहे कि इहे विद्यार्थी लोगन में से कउनो एगो समर्थ निबंधकार भी हो सकेला। एहि सब महान उद्देश्यन के पूर्त्ति खातिर एहि पाठ्यक्रम में विद्वान निबंधकार डॉ॰ विद्या निवास मिश्र के बहुचर्चित आ सुप्रसिद्ध भोजपुरी निबंध 'इमली के बीया' का समायोजन कइल गइल बा। छात्र लोगन के निबंध विषयक गहन अध्ययन कराबल ही एकर उद्देश्य बाटे। छात्र लोगन ही भारत देश के भावी भविष्य बाड़न सन।

निबंध लेखन–अध्ययन से छात्र लोगन के ज्ञान, शब्द–भंडार, तर्क–वितर्क करे के क्षमता, गुण–दोष विवेचन होला। एहि कारण से छात्र–हित में एह पाठ के समायोजन कइल गइल बा। निबंध–लेखन–अध्ययन, चिंतन–मनन कइल लंगड़ी भाषा भा बेजान भाषा के माखौल उड़ावल नइखे, एकरा में कवनो वासी भाषा–शैली के भोंड़ी नकल भी ना कइल जा सकेला। सर्वोत्तम निबंधन बिजुरी के लेखा अइसन चकाचौंध पैदा करेला जेकरा से पल भर में पाठक के अपना ओरिया आकृष्ट करि लेबेला, आपन आलोक के कनक–रेखा खींच के आगू में राखि देबेला। डॉ॰ विद्या निवास मिश्र लिखल निबंध 'इमली के बीया' के हम इहे रूप में एहिजा देखि सकिला। महत् उद्देश्य के पूर्त्ति खातिर एह पाठ के समायोजन कइल गइल बा ताकि छात्र लोकनि के अपेक्षित विकास भ सके।

उत्कृष्ट निबंध अइसन फूलन से लादल रजनी गंधा होखेला जेकरा से होके बहे वाली बयार मदमस्त होके बहेली आ ओकर एक झोंका पाठक के मन–परान के मह मह करावत बह चलेली। साहित्य के एह विद्या में एक तरे से भैरवी के एगो अइसन अंतः स्पर्शिनीतान होखेला, जे सुतल–दबल दरद के जगा देबेला, उभार देबेला। एह विद्या में एगो अइसन लह लह चिनगारी बास करेला जकरा से विचारन के दुनिया में आगि लेखा लहकत फूल खिल जाला। समर्थ निबंधकारन के दमदार शब्द–चयन में अइसन ताकत होखेला जकरा से सुतल पड़ल सरिता के अंतर्गुहा में भी हिलकोर उठ खड़ा होखेला, एकर वजनदार, दमदार भाव में अतना वजन होखेला जे कइसनो ढूह–टीला के क्षणभर में ढाह के समतल भूमि में बदल देबेला। एह उत्कृष्ट निबंध में एकर दर्शन सहजता से हो जाला। विद्वान निबंधकार के ज्ञान से छात्र के कंटक–पथ के पाथेय बनावल उद्देश्य ह।

निबंध गद्य के एगो प्रमुख विद्या होखेला। आजु के वैज्ञानिक युग में भी एकर लेखन में कवनो कमी ना भइल ह। एकर उत्स ओइसे त संस्कृत साहित्य में देखे के मिलेला बाकिर साहित्यिक विधा के रूप में एकर प्रस्तुतीकरण के श्रेय फ्रेंच निबंधकार मानतेन के जाला। फ्रेंच साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, हिन्दी साहित्य से होके ई साहित्यिक विधा भोजपुरी साहित्य में आइल बा। एकर निबंधकार डॉ॰ विद्या निवास मिश्र हिन्दी साहित्य में ललित निबंधकार के रूप में स्थापित बाड़न। हिन्दी साहित्य के स्थापित निबंधकार जदि भोजपुरी मातृभाषा में एह निबंध के लेके आइल बानी त ई उद्देश्य भरल ही कहल जा सकेला। भोजपुरी मातृभाषा के छात्र लोगन के अपेक्षित ज्ञानवर्द्धन आ निबंध लेखन के ओरिया प्रेरित कइल एकर महत उद्देश्य ह। आलोच्य निबंधकार आपन प्रस्तुत निबंध में आपन व्यक्तित्व के अभिव्यक्त कइले बानीं। हम

इहो कहि सकिला कि एहिजा निबंधकार छात्र–हित खातिर आपन सहज, सरल आ स्वाभाविक रूप के प्रस्तुत कइले बानीं, आपन भाव–संवेदन आ विचार–मंथन से छात्र लोगन के मन–मस्तिष्क के झकझोर के राखि देले बानीं। ऊहाँ के आपन अनुभव भा अनुभूतियन आ स्वतंत्र चिंतन के सरल, संक्षिप्त आ मर्यादित प्रकाशन कइले बानीं। ओइसे भी कवनो निबंध के आकार अनिश्चित होखेला। फेर एकर विषय–क्षेत्र भी बड़हन होखेला। एकर सांगोपांग विवेचन करि के आ छात्र–हित खातिर एकरा निमन तरे प्रस्तुत करि के निबंधकार आपन महत उद्देश्य के एहिजा अभिव्यंजना कइले बानीं। आपन कथ्य के मुहावरा आ लोकोक्ति के सहारे प्रस्तुत करि के ऊहाँ के भोजपुरी भाषा के लालित्य प्रस्तुत कइले बानी ताकि मातृभाषा भोजपुरी के ओरिया एह भाषा–भाषी छात्र लोगन आकृष्ट हो सके।

अइसन देखल जाता कि नवका उमीर के पढ़ल–लिखल लइकन आपन मातृभाषा भोजपुरी से दूर भइल जा ताड़न। उनुका सभ के आपन मातृभाषा भोजपुरी बोले में सरम आ हीन–भावना के अनुंभव भ रहल ह। हिन्दी आ अंग्रेजी भाषा के बोलि के एह सभ गौरवान्वित भ रहलन ह सन। 'चल मातृभाषा भोजपुरी के ओरिया'। जब आपन भोजपुरी मातृभाषा में नीमन, सुंदर–सुघड़ निबंध पढ़े के मिल जाला त काहे केहू दोसर भाषा के पंजरा तरे निबंध पढ़े जाई। जीवनानुभव से परिचित निबंधकार एहिजा इहो उद्देश्य के पूर्त्ति कइले बानीं।

भारत में पाश्चात्य देशन से होइत निबंध आइल बा त एकर महत्त्वांकन कइल जा सकेला। भारत लेखा पाश्चात्य देशन में भी एह निबंध के एगो प्रमुख साहित्यिक विधा के रूप में मान्यता दिहल निश्चित रूप से कवनो सार्थक उद्देश्य के कइल होखी। ई उद्देश्य व्यक्त आ अव्यक्त दूनो रूप में हो सकेला। ई कवना तरी जीवन–मीमांसा भा विचार–सामग्री के रूप में आबेला, ई विचारणीय प्रश्न ह। एह प्रश्न के उत्तर देइत हम कह सकिला कि एकर उद्देश्य के संबंध आंतरिक आ बाह्य संघर्ष से भी रहेला। ई संघर्ष पाठक सभ भा छात्र लोगन के उद्देश्य के ग्रहण कइला खातिर तइयार कर देबेला। आजु के बुद्धिजीवी वर्ग लाभ–हानि के ऊपरा विचार–विमर्श कइला के बादे कवनो चीज के ग्रहण करेलन सन। जब ई निबंध विधा पाश्चात्य देशन के लोगन के अति विकसित बुद्धिवाद के मस्तिष्क का ऊपज ह त एकरा केहू उद्देश्य हीन नहिये ना कह सकेला। अस्तु हम कह सकिला कि एह निबंध के पाठयक्रम में जगहा दिहल कवनो सार्थक उद्देश्य के ही वाचक ह। हम इहो कह सकिला कि एकरा पाठ में समायोजन का पाछे गांभीर्य ही अधिका ह। ई तथ्य से इन्कार ना कइल जा सकेला कि निबंध विधा में आझ–काल्हि कवनो तरे के काँट–छाँट विभाजन स्वीकार्य नइखे। पहिले ई बहुत अधिका रहे।

मानव–इन्द्रिय के प्रभावित कइला के दृष्टि से काव्य के दू विभाग कइल गइल ह– 1. दृश्य काव्य आ 2. श्रव्य काव्य। नाटक विधा त दृश्य काव्य के अंतर्गत आबेला बाकिर सब साहित्यिक विधा–कविता, कहानी, निबंध आदि श्रव्य काव्य के अंतर्गत आबेला। रेडियो नाटक भा प्रहसन के हम दूनो विभाग के अंतर्गत राखि सकिला। निबंध शुद्ध रूप से एगो श्रव्य काव्य ह। एहि कारण एकर प्रभावोत्पादक शक्ति बढ़ल–चढ़ल ह। ओइसे भी मूर्त्त आ प्रत्यक्ष जतना बुद्धि गम्य होखेला, ओतना अमूर्त्त आ अप्रत्यक्ष ना होखेला। एह तरे कवनो निबंध में लोकहित, लोकमंगल आ लोकरंजन के क्षमता विपुल मात्रा में उपलब्ध रहेला। आलोच्य निबंध के निहितार्थ उद्देश्य इहे में सुरक्षित ह।

कवनो निबंध के कथ्य भले ही सुखांत होखे भा दुखांत बाकिर ओकर शैली के सरसता ओकरा में आनंद के ही सृष्टि करेला। निबंध पढ़ते मातर पाठक के अंतरतम में गुदगुदी बरे लागेला। आलोच्य निबंध एकर श्रेष्ठ उदाहरण कहल जा सकेला। निबंधकार डॉ॰ मिश्र जी एह में अइसन–अइसन प्रसंग के उल्लेख कइले बानीं आ अतना चुटीली शैली में प्रस्तुति कइले बानी कि पढ़ते आनंद रस के सोता प्रस्फुटित हो जाला। ई बड़हन उद्देश्य के सूचना बाटे।

अंततः हम कह सकिला कि भारतीय आ पाश्चात्य जगत में निबंध के एगो पुरान परंपरा रहल ह। दूनो जगत में निबंध–लेखन के उद्देश्य भी समान ही रहल ह। तइयो भारतीय भाषा में लिखल निबंध भारतीय जनता खातिर अधिक उपयुक्त आ ओकर सर्वांग पूर्त्ति के उद्देश्य के अधिका करीब ह। इहे उद्देश्य के पूर्ति खातिर संस्कृत साहित्य, पाश्चात्य साहित्य से ल'क' भोजपुरी साहित्य तक निबंध के एगो लमहर परंपरा रहल ह। 'नाना पुराण निगमागम....भाषा निबंध मति मंजुल मातनोति' संस्कृत साहित्य से ल'क' भोजपुरी निबंध साहित्य तक के कइल ई साहित्यिक–यात्रा कवनो महत् उद्देश्य के ही सूचक ह। जवन उद्देश्य के पूर्त्ति खातिर निबंध लमहर इतिहास परंपरा के गवाह बनल ह, ओकरा में एकरा शत–प्रतिशत सफलता हाथ लागल बा। सुख–दुःख, हर्ष–विषाद, आनंद–म्लान, उत्कर्ष–अपकर्ष आदि के बावजूद भी निबंध मानव के लोक–जीवन के अधिका निकट ह आ इहे एकर एगो प्रमुख उद्देश्य ह।

6.1 प्रस्तावना

'इमली की बीया' डॉ॰ विद्या निवास मिश्र लिखल एगो प्रसिद्ध ललित निबंध ह। एह में वैयक्तिकता के बेसी महत्त्व दिहल गइल बा। एहि कारण एकरा ललित निबंध के संज्ञा से अभिहित कइल जा सकेला। एह निबंध में नवका जीवन–बोध, जिजीविषा, ग्रामीण जन–जीवन में उपलब्ध नवकी सामाजिक समस्या सभ के जीवंत चित्र साहित्यिक थाल में परोसल गइल ह। फेर एह तरे के सामाजिक समस्यन का बीच से नवकी राह पाबे के ललक भी अभिव्यंजित कइल गइल बा। इनकर एह तरह के कइल प्रयास इनका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध–स्कूल के निबंधकार सिद्ध करता। ई उनुकर भाव–भंगिमा से आपन निबंध के मुक्त ना कर पबलन ह। ग्रामीण जीवन के चित्र निमन तरे से ऊहाँ के आपन निबंध में चित्रित कइले बानी। ऊहाँ के आपन गाँव–जवार के लोगन के बहुत गहराई में जाके देखले बानी जेकर सर्वांगपूर्ण बरनन ई अलोच्य निबंध में देखल जा सकेला।

निबंधकार ग्रामीण जीवन आ नगरीय जीवन दूनो के भोगले बानीं बाकिर इनकर आत्मा अभियो गाँव में ही बसल ह। इनका गाँव के ढेला से अधिका चोट लागल बा। नगरीय जीवन में लागल पत्थर के रोड़ा से चोट के ऊहाँ के बिसर गइल बानीं। फलतः गाँव के खेत–खरिहान, आरी–पगारी, गाछ–बिरीछ, फेड़–पौधा, सामंत शाही, जमींदार, बनिया, महाजन, बाग–बगिया, नारी–नाला, आम के सभ जाति, कोल्हू के रस, गुड़ पाक, तरह–तरह के गुड़ के भेली के सवाद आदि के चित्र सिनेमा के रील लेखा इनकर मन–मस्तिष्क का आगा नाचित रहेला। ऊहाँ के ई सब चीजन के भुलइलो पर ना भूल पाइला। 'इमली का बीया' ललित निबंध में ऊहाँ के ई सभ चीजन के बरनन बड़ सजीव ढंग से कइले बानीं। एकर जीवंत आ प्राणवंत चित्रण आलोच्य निबंध के लांलित्य–योजना में चार चाँद लगइले बा।

इहाँ के इमली के फेड़ के बहाने आउर दोसर–दोसर गाछ–बिरीछ के भी चर्चा कइले बानीं। गूलर, पाकड़, नीम, बरगद पिपर आदि गाछ–बिरीछ भी इमली के फेड़ लेखा पहिले गाँव में खूब रहे। एह फेड़ के कवनो काटत ना रहे जकरा चलते पर्यावरण संतुलन में सहयोग मिलत रहे। साँस लेबे खातिर शुद्ध ऑक्सीजन मिलत रहे आ लोग स्वस्थ, निरोग, दीर्घायु रहत रहन सन। एह सभ गाछ–बिरीछ के संरक्षण खातिर पुरनिया लोगन एह सब के धर्म आ संस्कृति से जोड़ देले रहन जा। बरगद, पिपर, नीम आदि गाछ–बिरिछ पर देवी–देवता के बास होखेला। एह चलते केहू एकरा ना काटत रहे आउर बेसी संख्या में एकर गाछ–बिरीछ लगावत रहे। एह चलते प्रकृति आ पर्यावरण के बीच में सदैव संतुलन बनल रहे। समय पर बरखा होत रहे, समय पर जलवायु–परिवर्तन होखे, मानव–जीवन खुशहाल भइल रहे। बाकिर आझ एकर अभाव भ गइल बा। ई एगो देशीय ना वैश्विक समस्या भ'गइल ह। एकर दुष्परिणाम सउँसे विश्व भर के मानव–समुदाय भोग रहल बा। 'इमली की बीया' ललित निबंध में निबंधकार डॉ॰ विद्या निवास मिश्र एकर चर्चा कइले बानी।

शील, संस्कार, समर्पण आ धर्म से जोड़ि के एह निबंध में गाछ–बिरीछ के उपयोगिता आ महत्त्व बढ़ावल गइल बा। विद्वान निबंधकार भारतीय सभ्यता आ संस्कृति के पोषक बानी। उनकर दृष्टि में एह सभ गाछ–बिरीछ भारतीय सभ्यता आ संस्कृति के वाहक ह। इमली के फेड़ जड़ि लेखा भारतीय संस्कृति के जड़ि धरती के अंदर गड़ाइल ह। एकरा बचाबे के जरूरत ह आ ओकरा फुनगी पर पहुँचावल जरूरी बा। एही तरे भारतीय सभ्यता आ संस्कृति के पहचान विश्वभर में बा। एकर सोर अतना गहराई तक धँसल बा कि हल्का हवा–बतास, आन्ही–पानी ओकरा हिला–डूला ना सकेला, ओकर किछुओ बिगाड़ ना सकेला। भारत देश के आत्मा गाँव में बसेला आ एकर समता विश्व के कवनो देश ना कर सकेला। विश्व मानव–समुदाय भारतीय संस्कृति के देखि के ललचाये ले सन। भारत पर अतना आक्रमण भइल, विदेशी लुटेरन लोग एकर अन्न–धन लुटि ले गइलन सन बाकिर एकर सभ्यता आ संस्कृति आझ ले अक्षुण्ण बाचल बा। जवन देश के संस्कृति मिट जाला, ओह देश के अस्तित्व भी मिट जाला। फेर देशवासियन लोग भी जीअते खनी मूअला लेखा लउके लागेलन सन। सभ कुछ लुटइला के बादो जदि आपन संस्कृति बाचल रहेला त कुछियो ना लुटायेला। निबंधकार एहि निबंध में 'इमली के बीया' के माध्यम से सत्ता, समाज, संस्कार आ सभ्यता–संस्कृति के भूमिका के अंर्तसंबंध के खोज कइले बानीं। निबंध जइसन नीरस विषय के सरस आ रोचक ढंग से प्रस्तुतीकरण करि के इहाँ के कमाल के प्रदर्शन कइले बानीं। एह में दरकत पारंपारिक मूल्यन के चित्रण भइल बा।

6.2 निबंधकार के परिचयः डॉ॰ विद्या निवास मिश्र

डॉ॰ विद्या निवास मिश्र के जन्म 14 जनवरी 1924 ई॰ के गोरखपुर जिला के पकड़डीहा गाँव में भइल रहे। ऊहाँ के प्रारंभिक शिक्षा आपन गाँव में भइल रहे। ओकरा बाद ऊहाँ के माध्यमिक शिक्षा गोरखपुर में भइल रहे। उच्च शिक्षा खातिर ऊहाँ के बनारस चल अइनीं आ एहिजे से ऊहाँ के एम॰ ए॰, पीएच॰डी॰ तक उपाधि पइलीं। ऊहाँ के संस्कृत के पारंपरिक शिक्षा घरे पर पइले रहीं आ बनारस अइला प ऊहाँ के एह भाषा में निष्णात भइनीं। हिन्दी, संस्कृत आ अंग्रेजी भाषा के ऊहाँ के प्रकांड पंडित रहनीं। तइयो आपन मातृभाषा भोजपुरी के समृद्ध बनाबे खातिर ऊहाँ के कवनो कोर कसर ना छोड़नी। ऊहाँ के एगो

बहुभाषाविद् विद्वान रहीं। इनका हिन्दी साहित्य में ललित निबंधकार के रूप में सर्वाधिक ख्याति मिलल रहे।

हिन्दी ललित निबंध के तरे ऊहाँ के भोजपुरी ललित निबंध में भी दक्षता भेंटल रहे। भोजपुरी ललित निबंध में इनकर कुछु प्रसिद्ध रचना है–'मानिक मोर हेरइले', 'इमली के बीया' आदि। ऊहाँ के भोजपुरी ललित निबंध रचनन के संग्रह 'मानिक मोर हेरइले', नाँव से छपल बा। एकरा अलावे ऊहाँ के 'वाचिक कविता भोजपुरी' नाँव से भोजपुरी लोकगीतन के संकलन कइले बानीं। ऊहाँ के भोजपुरी के विकास खातिर किछुओ ना उठा रखले रहीं। ऊहाँ के भोजपुरी के एगो कर्मठ योद्धा रहीं। ऊहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 11वाँ अधिवेशन (26–27 मई 1990, रेणुकूट, उत्तर प्रदेश) के अध्यक्षता कइले रहीं।

ऊहाँ के एक सौ से अधिका पुस्तक प्रकाशित बा। एह तरे ऊहाँ के माता सरस्वती के एगो वरदपुत्र रहीं। ऊहाँ के जहिया तक जीवित रहनीं, तहिया तक माँ भारती के आरती उतारत रहनीं। इनकर कुछ प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तक ह–'छितवन की छाँह', 'मेरे राम का मुकुट भींग रहा है', 'तमाल के झरोखे से', 'रामायण का काव्य–मर्म', 'तुम चंदन हम पानी', 'आंगन का पंछी और वनजारा मन', 'मैंने सिल पहुँचाई' आदि। भारतीय लोक–संस्कृति, मानवीय जीवन–मूल्य आ माटी के गंध ऊहाँ के लेखन में रचल–बसल बा। इनकर निबंधन में भारतीय साहित्य आ संस्कृति के लोक जीवन के साथ जोड़े के उन्मुक्त प्रयास कइल गइल बा। ऊहाँ के आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी संस्थान के प्रख्यात निबंधकार रहीं। ऊहाँ के सभ निबंधन पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रभाव पड़ल बा।

6.3 'निबंध' शब्द के व्याख्या आ परिभाषा

'गद्य कवीनां निकष वदन्ति' आचार्य वामन के एह उक्ति के देखि के हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक आ निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखले बानी कि जदि पद्य कवियन के कसौटी ह त निबंध गद्य के कसौटी ह। 'वाचस्पतयम कोश' में नि+बंध (बाँधल) + घञ (जमा कइल) रोकल कहल गइल बा। भोजपुरी में जवन निबंध साहित्यिक विधा के चर्चा कइल जा रहल ह, ऊ वस्तुतः हिन्दी के समानान्तर ह। लैटिन में एकरा खातिर 'एक्सेजियर', फ्रेंच में 'एसाई' आ अंग्रेजी के 'एसे' के प्रयोग होखेला। एकर शाब्दिक अर्थ प्रयत्न, प्रयोग, बंधनयुक्त, बंधनहीन आ परीक्षण होखेला। 'निः+बंध = निबंध' के आधार प एकरा बंधनहीन भी कहल जा सकेला।

हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन के अनेक विद्वानन एकरा परिभाषित कइले बानी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ॰ श्याम सुंदर दास, डॉ॰ नगेन्द्र, बाबू गुलाब राय, जयनाथ नलिन सहित पाश्चात्य विद्वानन मान्तेन, हडसन, डॉ॰ जानसन, हेनरी मोर्ले, हर्बर्ट रीड, लेवो आदि भी एकरा परिभाषित कइले बानी। कमोवेश सभ भारतीय आ पाश्चात्य विद्वानन के मत में साम्य बाटे। एह सभ विद्वानन के निबंध के परिभाषा देखला से स्पष्ट होला जे आजुक निबंधकार लोगन आपन निबंध में वर्ण्य–विषय के महत्त्व दे रहल बानीं। फेर प्राच्य आ पाश्चात्य निबंधकारन आपन निबंध में वैयक्तिकता आ स्वच्छंदता के अंगीकार कइले बानी सन। एह सभक आधार पर हम निबंध के परिभाषित करत कह सकीला–''निबंध गद्यकाव्य के एगो अइसन विधा ह, जेकरा में सीमा में रहि के विभिन्न रूप–जगत के प्रति आपन विचारात्मक आ भावात्मक प्रतिक्रिया दिहल जाला।'' निबंध में श्रेष्ठता खातिर आपन विचार ठूँस–ठूँस के भरल जाला

ताकि पाठक के बुद्धि ओकरा से उत्तेजित भ' क कवनो नवकी विचार–पद्धति ओरिया भाग–दौड़ करि सके। एकरे खातिर एह विधा में प्रभावोत्पादकता पर विशेष बल दिहल जाला।

6.4 निबंध के प्रकार आ भोजपुरी निबंध – 'इमली के बीया'

अधिकांश विद्वान लोगन निबंध के चार विभाग कइले बानीं–

1. वर्णनात्मक (Descriptive)
2. विवरणात्मक (Narrative)
3. विचारात्मक (Reflective) आ
4. भावात्मक (Emotional)

वर्णनात्मक निबंध में वस्तु के स्थिर रूप में देखल जाला। एकर संबंध देश से होखेला। विवरणात्मक निबंध में अधिकांशतः काल के ग्रहण कइल जाला। एह में वस्तु के गतिशील रूप में देखल जाला। विचारात्मक निबंध में तर्क के प्रधानता रहेला। एह में मस्तिष्क के काम अधिका रहेला। भावात्मक निबंध में निबंध के संबंध हृदय से रहेला। एह आधार पर भोजपुरी निबंध 'इमली के बीया' एगो भावात्मक निबंध ह। कवनो–कवनो निबंध में विचारात्मक आ भावात्मक दूनो के मिश्रण भी होखेला। तइयो हम आलोच्य निबंध में भावात्मकता के ही प्रधानता देखि रहल बानीं। काहे कि हमरा एह निबंध में भावुकता आ मनोवेगन के प्रधानता बेसी लउकता। एहि निबंध रूप दोसर निबंध रूपन से अधिका प्रभावशाली रूप भी होखेला।

6.5 निबंध के भाषा आ शैलीः भोजपुरी निबंध 'इमली के बीया'

निबंध के भाषा सरल, सहज, प्रभावोत्पादक, रमणीय, रोचक आ सजीव होखे के चाहीं। एह में भाषा आपन पूरी शक्ति आ सज–धज के आवेला। निबंध में ही गद्य लेखक के शैली के पूरा विकास होला। कहलो जाला कि शैली ही व्यक्ति ह (Style is the man himself)। एह में शैली के अधिका महत्त्व दिहल जाला। डॉ॰ विद्या निवास मिश्र जइसन विद्वान निबंधकार एकरा ख्याल रखले बानीं आ 'इमली के बीया' में एकर अक्षरशः अनुपालन भी कइले बानीं। तत्सम शब्दन के साथ ठेठ भोजपुरी शब्दन के सुमेल करा के ऊहाँ के प्रांजल, सरस, रमणीय आ प्रभावोत्पादक भाषा–शैली के प्रयोग एह निबंध में कइले बानीं। छोटे–छोटे वाक्यन में गंभीर आ दुरूह भावन के एहिजा प्रदर्शन कइल गइल बा। एकर संप्रेषणीयता भी अद्‌भुत बाटे।

निबंध के ढेरमनी शैली हो सकेला। विचारात्मक निबंध के शैली दू तरे के होला – 1. व्यासात्मक आ 2. समासात्मक। भाव प्रधान निबंध के शैली तीन तरे के होला – 1. धारा शैली, 2. तरंग शैली आ 3. विक्षेप या प्रलाप शैली। 'इमली के बीया' भाव प्रधान निबंध में एहि शैली क' प्रयोग भइल बा।

6.6 भोजपुरी निबंध के उद्‌भव आ विकास

भोजपुरी निबंध हिन्दी निबंध के समानान्तर लिखाइल बा काहे कि जवना निबंधकार हिन्दी में निबंध लिखत रहीं, ओहि भोजपुरी में भी कुछु निबंधन के रचना कइले बानीं। भोजपुरी में विषयनिष्ठ चिंतनपरक लेखन के कमी बा। निजी, भावपूर्ण, मनोरंजन, हास्य–व्यंग्य, विनोद

प्रधान, वर्णनात्मक आ अखबारी बयान वाला निबंधन के संख्या भोजपुरी में अधिका बा। तइयो भोजपुरी निबंध प्रगति–पथ पर अग्रसर बा।

भोजपुरी निबंध 'पानी' निबंधकार आचार्य महेन्द्र शास्त्री से एकर सफर के शुरूआत 1948 में भइल बा। एकरे भोजपुरी के पहिल निबंध आ इनके भोजपुरी के पहिल निबंधकार कहल जा सकेला। एही साल आचार्य महेन्द्र शास्त्री के संपादन में एगो द्विमासिक पत्रिका 'भोजपुरी' के प्रकाशन प्रारंभ भइल रहे। एहि में ई निबंध पहिल बेर प्रकाशित भइल रहे। फेर बाद में ई पत्रिका बाबू रघुवंश नारायण सिंह का संपादन में मासिक निकले लागल। एकरा बादे भोजपुरी निबंध भी खूब लिखाई लागल। 1960 ई॰ में पांडेय नर्मदेश्वर सहाय के संपादन में एगो तिमाही पत्रिका 'अंजोर' के प्रकाशन प्रारंभ भइल जे 1979 ई॰ तक आपन नियत समय पर प्रकाशित होइत रहल। एह 19 बरिस के अंतराल में एहि पत्रिका में कतना भोजपुरी निबंधन के प्रकाशन भइल रहे। एहिजा ई बता दिहल जरूरी बा कि भोजपुरी निबंध पर एह काल तक कवनो स्वतंत्र पुस्तक प्रकाशित ना भइल रहे। जवन–जवन निबंधन के प्रकाशन भइल रहे, ऊ सब के सब पत्र–पत्रिका में ही प्रकाशित भइल रहे। तइयो भोजपुरी निबंधन के संख्या वृद्धि तीव्र गति से होइत रहल। एहि तरे डॉ॰ जितराम पाठक के संपादन में प्रकाशित पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य' में भी दोसर विधा के साथे निबंधन के खूब प्रकाशन भइल रहे। ऊहाँ के खुदे ललित निबंधकार रहीं आ 'पनही' इनकर प्रसिद्ध ललित निबंध ह। स्वाभाविक ह कि ऊहाँ के निबंध साहित्यिक विधा पर बेसी जोर देले होइहें। एहि तरे भुवनेश्वर प्र॰ श्रीवास्तव के संपादन में प्रकाशित पत्रिका 'गाँव–घर', आचार्य प्रतापादित्य के संपादन में प्रकाशित पत्रिका 'भोजपुरी वार्त्ता', राजबली पांडेय के संपादन में प्रकाशित पत्रिका 'पुरवइया' आदि में भी भोजपुरी निबंध के खूब प्रकाशन भइल रहे। भोजपुरिया साहित्यकार लोगन एकर संकलन ना करि पबलन, इहे दुखद बात ह।

भोजपुरी निबंधन के विकास में हिन्दी दैनिक पत्र 'आज' के बहुत योगदान बा। एकर बनारस आ पटना दूनो जगहा के संस्करण में ढेरमनी भोजपुरी निबंधन के प्रकाशन भइल रहे। एकर बनारस संस्करण में एगो स्तंभ रहे– 'चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ'। एह में 14–15 गो भोजपुरी निबंधन के प्रकाशन भइल रहे। एह सब में खाँटी भोजपुरी निबंधन के दर्शन भइल रहे। एहि पत्र में डॉ॰ विवेकी राय के एगो स्तंभ 'मनबोध मास्टर की डायरी' छपल रहे। एकरो खूब चर्चा भइल रहे। ओकरा संबंध में ऊहाँ के 'बात क बात' पुस्तक के भूमिका में लिखले रहीं– ''उन निबंधों ने अपनी जो गहरी छवि छोड़ी है, वह वास्तव में आधुनिक भोजपुरी गद्य का गौरव है।'' दैनिक 'आज' पटना संस्करण में 'भोजपुरी पाती' नाम से सप्ताह में एक दिन भोजपुरी निबंध छपत रहे। कतना बरिस ले एकर प्रकाशन नियमित रूप से भइल रहे जे एह निबंध के विकास के सूचक ह। ई सभ भोजपुरी निबंधन के निबंधकारन ओकरा पुस्तकाकार रूपना दे पबलीं।

1957–58 में चतुरी चाचा के एह चिट्ठियन के संग्रह दू भाग में छप के पुस्तकाकार भइल रहे। 1962 ई॰ में भोजपुरी परिषद् जमशेदपुर से चंद्रभूषण सिन्हा के संपादन में 'भोजपुरी संगम' नामक पुस्तक प्रकाशित भइल रहे। गद्य–पद्य के ई संग्रह में मजगर भोजपुरी निबंध भी रहे। कोलकाता से छपल 'भोजपुरी संकलन' नामक पुस्तक में दूगो निबंध छपल रहे– 1. 'सावन हे सखि परम सुहावन' आ 2. 'आजादी के मोल'। 1966 में राधा मोहन 'राधेश' के

संपादन में 'जिरादेई से सदाकत आश्रम तक' एगो गद्य–पद्य संग्रह पुस्तक छपल रहे। एह में भी कतना लेखकन के भोजपुरी निबंध छपल रहे। एह सब भोजपुरी निबंधन के विकास के सूचक बाटे।

डॉ॰ विवेकी राय के एगो भोजपुरी ललित निबंध के संग्रह छपल रहे। एकर नाँव ह– 'के कहल चुनरी रंगाल'। ई चर्चित पुस्तक भोजपुरी संसद वाराणसी से प्रकाशित भइल रहे।

1969 में 'लहालोट' के संपादक बच्चन पाठक सलिल; 'गाँधी गाथा' संपादक राधा मोहन राधेश भी छपल रहे। 'लहालोट' में 17 निबंध आ 'गाँधी गाथा' में 12 निबंधन के संग्रह कइल गइल रहे। ई सभ उत्कृष्ट कोटि के भोजपुरी निबंध बाड़े सन।

1977 में भोजपुरी निबंध के नीमन विकास भइल रहे। एह साल 'भोजपुरी कुछ समस्या आ समाधान' (पं॰ गणेश चौबे), 'अंगऊ' (अक्षयवर दीक्षित), 'बात क बात' (कुलदीप नारायण झड़प), 'कलमिया नाहीं वश में' (सत्यवादी छपरहिया), 'मन के मौज' (विन्ध्याचल प्र॰ श्रीवास्तव), 'जीवन गीत' (हरि शंकर वर्मा), 'रेखा पर रेखा' (लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी), 'भोजपुरी निबंध निकुंज' (सं॰ विवेकी राय, सिपाही सिंह श्रीमंत), 'ललित निबंधावली' (जितराम पाठक, शालिग्राम उपाध्याय, अनिल कुमार राय) आदि के प्रकाशन भइल आ भोजपुरी निबंध के नीमन विकास भइल रहे। एह काल के भोजपुरी निबंधन के विकास–काल कहल जा सकेला।

एकरा बाद भोजपुरी निबंधन के बाढ़ि आ गइल ह। कुछ प्रमुख निबंध आ निबंधकारन के सूची ह – 'बतकूचन' (महेश्वराचार्य), 'नवरंग' (नागेन्द्र प्र॰ सिंह), 'कलम के निशान' (उमा शंकर सिंह), 'जीअल सीखीं' (प्रफुल्लचंद ओझा), 'पंचमेवा' (सुकदेव सिंह), 'घर के गुर' (अविनाश चंद्र विद्यार्थी), 'भोजपुरी संस्कृति आ दोसर निबंध' (डॉ॰ स्वर्ण किरण), 'ए बचबा फूल फेरऽ' आ 'माई' (आशा रानी लाल), 'घोघो रानी कतना पानी' (डॉ॰ सत्येन्द्र सुमन), 'देश के महान सपूतः जगजीवन बाबू' (उमा कुमारी), 'भोजपुरी के धनः जनगर–पनिगर शब्द' (डॉ॰ अनिल कुमार), 'ग्रियर्सन आ सुनीति कुमार चटर्जी' (डॉ॰ उदय नारायण तिवारी), 'पारन' (डॉ भगवत शरण उपाध्याय), 'भोजपुरी प्रदेश में नीम, आम आ जामुन' (डॉ॰ राजेन्द्र प्र॰ सिंह) आदि। ई तरह से हम देखिला कि भोजपुरी निबंध क उत्तरोत्तर विकास भ' रहल बा। आजुक समइया वैश्वीकरण के कारण आजुक भोजपुरी निबंध में वर्ण्य–विषय के व्यापकता भ' गइल ह। भोजपुरी निबंधकारननिबंध के विकास खातिर तत्पर बानी सन। स्कूल–कउलेज में एह भाषा के पढ़ाई प्रारंभ भइला से भोजपुरी निबंध–लेखन जोरि पकड़ लेले बा।

6.7 'इमली के बीया' : वर्ण्य–विषय आ भाषिक शिल्प

'इमली के बीया' निबंध में निबंधकार डॉ॰ विद्या निवास मिश्र गाँव में उपजल गाछ–बिरीछ पर चर्चा कइले बानी। गाँव में आम, जामुन, नीम, इमली, पाकड़, बरगद, पिपर आदि ढेर मनी जाति के गाछ–बिरीछ होलन सन। एह सब गाछ–बिरीछ के आपन–आपन महत्त्व होखेला। लोग अधिका संख्या में गाँव में गाछ–बिरीछ लगावत रहन। एकरा से लकड़ी, जलावन, फल, फूल आ हरिअरी मिलत रहे। गाँव में गर्मी कम पड़त रहे आ बरखा भी खूब होत रहे। एकरा से कृषि कार्य, दवा–बीरो, जलवायु–परिवर्त्तन सब ठीक–ठाक से चलत रहे। बाकिर आजुका लोग एकर महत्त्व नइखे बूझत आ फेड़–बगाध के काटि देलन सन। एकर

दुष्परिणाम व्यक्ति, घर–परिवार, समाज, देश आ विश्व मानव–समुदाय के भुगते पड़ रहल बा। विद्वान निबंधकार एह सब बाती के ई निबंध में बड़ विस्तार से बतबले बानीं।

निबंधकार गाँव में जनम लेले बानी आ आपन बाल–जीवन भी बितबले बानी। गाँव के हर चीज से ऊहाँ के परिचित बानी। पहिले का आमो विविध जाति के रहन–सन आ ओकर सवादो अलग–अलग रहे। आझ–काल्हि ओह सवाद के दर्शन नइखे होखत। लागता कि सभ कुछ आझ गाँव में हेरा गइल बा। एही तरे आलू–पाक के एगो अलगे कहानी रहल ह। ओकरा पढ़ि के आजु अजब–गजब लागेला। ऊख कोल्हू में पेरात रहे आ ओकर रस से कोलसार में गुड़ बनत रहे। ओह रस के कतना तरे लोग उपभोग करते रहे। नीमन से नीमन तरे भेली बनत रहे। ओकर सवाद अलगे रहे। एह सब बातिन के निबंधकार सरल, सहज, रोचक आ प्रभावोत्पादक भाषा–शैली में लिखले बानी। तत्सम शब्द के भी एहि निबंध में खूब प्रयोग भइल बा। तइयो सगरो ठेठ भोजपुरी शब्दन के ठाठ देखल जाला। आपन कथन के प्रभावशाली आ उत्तेजक बनाबे खातिर ऊहाँ के मुहावरा आ लोकोक्ति के भी खूब प्रयोग कइले बानी। ठेठ ग्रामीण संस्कृति में प्रचलित एह मुहावरा आ लोकोक्ति अतना सुंदर–सुघड़ ह कि ऊ सभ सीधे हृदय में उतरि जाले सन। एह लेखक के भाषिक–शिल्प सबसे अलगे बा।

निबंधकार गाछ–बिरीछ के संरक्षण खातिर ओकरा धरम आ संस्कृति से जोड़ि के देखबले बानी। गाँव के बूढ़–पुरनिया लोगन के मान्यता रहे कि नीम, बरगद, पिपर आदि गाछ–बिरीछ पर देवी–देउता लोगन के वास होखेला। एह से ई सभ फेड़न के काटे के मतलब बा देवी–देउता लोगन के निवास–स्थल के उजाड़ल। एह डर–भय देखा के लोग गाछ–बिरीछ के संरक्षण देत रहे आ एह संभ के धरम–संस्कृति के वाहक के रूप में मानत रहे। एह सभ बाति के साहित्यिक थाल में लेखक परोसले बानी। एकर प्रस्तुतीकरण खातिर ऊहाँ के अइसन चुटीली–चुलबुली भाषा–शैली के प्रयोग कइले बानी जे सीधे दिल के गइराई में उतरि जाला। भाषिक–शिल्प के परकाष्ठा एह निबंध के जान–परान ह। जहवाँ कथ्य, वर्ण्य–विषय कमजोर लागेला, उहवाँ मजगूत भाषिक–शिल्प एह निबंध के जानदार, शानदार, रोबदार आ उत्कृष्ट बनइले बा।

गाँव घर के सुन्नर–सुघड़ तस्वीर ई निबंध में एह तरे चित्रित कइल गइलबा मानो सिनेमा के रील मनवाँ का आगा नाचत होखे। गाँव के डीह, बरहम, काली थान में जवने तरह से पूजा पाठ होत रहल रहे, ओकर चित्रण भी लेखक जीवंत आ प्राणवंत भाषा–शैली के सहारे बड़ बारीकी से कइले बानीं। लागता कि ऊहाँ के ऊ सभ के बार–बार ताजा आ टटका कके प्रस्तुत कइले होखें। इनकर भाषिक–शिल्प के बड़हन विशेषता बा कि ई आपन आलोच्य भावात्मक निबंध में विचारात्मक निबंध के मिश्रण करा के प्रस्तुत कइले बानी। ओइसे त इनकर कवनो ललित निबंध में विषय वस्तु भा वर्ण्य–विषय के प्रमुखता आ प्रधानता होखेला। गंभीर विषय के भी सरल–सहज ढंग से प्रस्तुतीकरण में इनका महारत हासिल बा। एहिजा इनकर निजी रूप ही बेसी परिलक्षित भइल बा। आपन लेखकीय–प्रतिभा के संपूर्ण दिग्दर्शन ऊहाँ के ई निबंध में करइले बानीं। एगो सधल भाषा–शिल्पी लेखा ऊहाँ के ई निबंध में भाषिक–शिल्प के दर्शन करइले बानी। का भाषा, का भाव, का वर्ण्य–विषय, का शिल्प–संधान, हर दृष्टि से ई निबंध एगो उत्कृष्ट निबंध ह आ लेखक भी भोजपुरी निबंध साहित्य के एगो बेताज बादशाह बानी।

6.8 'इमली के बीया': प्रासंगिकता आ महत्त्व

'इमली के बीया' प्रतीक बा मानव सभ्यता आ संस्कृति के तथाकथित विकास के जे विनाश के ओरिया अग्रसर बा। गाछ–बिरीछ के काटि के मानव दानव बनि गइल ह। 'इमली के बीया' के बहाने लेखक गाँव के तमाम पेड़–पालो के गुण–धर्म, हरियाली–सुंदरता आदि के अइसन सुन्नर–सुघड़ वर्णन कइले बानी कि ओकरा पढ़ि के केहू ना फेड़ काटि ना ओकरा कवनो नुकसान पहुँचाई। जवना के आझ बहुत बड़हन जरूरत बा। विश्वभर के मानव–समुदाय आझ जलवायु–परिवर्तन के दंश झेल रहल बा। एकर कल्पना लेखक आइ से बहुत पहिले ई निबंध के माध्यम से कइले रहीं। ई चलते एकर प्रासंगिकता आ महत्त्व बा।

आझ जंगल कटात जात बा, पहाड़ो पर गाछ–बिरीछ नइखे जकरा चलते पहाड़ धँसल जात बा। गाछ–बिरीछ के ना रहला से बरखा कम होत बा, गर्मी बढ़ल जात बा, जलवायु दूषित भइल बा, ऑक्सीजन के कमी से साँस लिहल दुभर हो गइल बा, रोग–किटाणु बढ़ल जात बा। जन–धन के भारी नुकसान भ' रहल बा। देश–विश्व के पर्यावरण–संतुलन बिगड़ गइल बा। विश्व समुदाय एह बाति के लेके चिंतित बा आ राष्ट्राध्यक्ष लोगन सभा करि रहल बाड़न सन। मानव–जाति के बचाबे खातिर अधिक से अधिक पेड़ लगावे के जरूरत महसूस कइल जाता। ई निबंध मानव के जन–जीवन से जुड़ल बा ओकरा बचाबे खातिर प्रयत्नशील लागता। एह से ई निबंध के प्रासंगिकता आ महत्त्व बा।

6.9 बोध–प्रश्नः–

1. निबंध के उद्देश्य पर प्रकाश डालीं।
2. 'इमली के बीया' निबंध के प्रस्तावना पर विचार करीं।
3. निबंधकार डॉ॰ विद्या निवास मिश्र के परिचय दिहीं।
4. 'निबंध' के व्याख्या करीत एकर विभिन्न प्रकारन के उल्लेख करीं।
5. 'इमली के बीया' निबंध के भाषा–शैली पर विचार करीं।
6. भोजपुरी निबंध के उद्‌भव आ विकास पर लेख लिखीं।
7. 'इमली के बीया' निबंध के वर्ण्य–विषय आ भाषिक–शिल्प के विवेचन करीं।

1. नीचे दिहल गइल प्रश्नन के संक्षिप्त उत्तर दिहीं–

1. ललित निबंध का बारे में लिखीं।

   .....

   .....

2. 'इमली के बीया' केकर प्रतीक ह आ काहे?

   .....

   .....

3. निबंधकार के का–का गुण होखे के चाहीं?

   .....

   .....

2. योग्यता–विस्तार

1. निबंध लेखन का अध्ययन के उपयोगिता पर प्रकाश डालीं।
2. काव्य के विभागन पर एगो बड़हन लेख लिखीं।
3. एगो ललित निबंध लिखे के कोशिश करीं आ सहपाठी लोगन के भी लिखे खातिर प्रेरित करीं।

3. भाषा–अध्ययन

1. प्रस्तुत पाठ में से भोजपुरी मुहावरा आ लोकोक्ति के चुनीं।
2. प्रस्तुत पाठ में से ठेठ भोजपुरी के शब्दन के चुन के सूची बनाईं।
3. उत्तर प्रदेश आ बिहार के भोजपुरी में कवन–कवन साम्य–वैषम्य ह?
4. निबंध के ऊ पंक्तियन के चुन के बताईं जवना में आनुप्रासिक प्रयोग भइल ह।
5. एह निबंध के शीर्षक 'इमली के बीया' काहे राखल गइल ह? एकरा जगहा प आउर का–का शीर्षक हो सकत रहे?
6. 'जलवायु–संतुलन में गाछ–बिरीछ के उपयोगिता' विषय पर आपन कक्षा में एगो परिचर्चा आयोजित करीं।

4. शब्दार्थ

हेराइल – भुलाइल
चीन्हा – निशानी, पहचान
पाथर – पत्थर
घरघुसना – घर में घुसल रहे वाला, मउग–मलार
पतियइबो – विश्वासो
नवका – नया, नवीन
बिसरल – भुलाइल, इयाद से दूर भइल
तब्बो – तब भी, तभी
कब्बो – कभी भी
एक्को – एक भी
लिलले – निगलले, पचवले
ओराई – खतम भइल
अधपाकल – आधा पका
नियर – जइसा, लेखा